Peer Reviewed
Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 47026)

ISSN 2319 - 359X

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Volume - XI, Issue - II, March - August - 2023
English / Marathi / Hindi Part - I

Impact Factor / Indexing
2023 - 7.537
www.sjifactor.com

AJANTA PRAKASHAN

ISSN 2319 - 359X

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Volume - XI Issue - II March - August - 2023

ENGLISH / MARATHI / HINDI PART - I

Peer Reviewed Refereed and
UGC Listed Journal No. 47026

Single Blind Review/Double Blind Review

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2023 - 7.537
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

VOLUME - XI, ISSUE - II - MARCH - AUGUST - 2023
IDEAL - ISSN - 2319 - 359X - IMPACT FACTOR - 7.537 (www.sjifactor.com)

१०. एरण की गुप्तकालीन मूर्तिकला एवं स्थापत्य शिल्प में प्रदर्शित सामाजिक स्थिति

प्रो. नागेश दुबे
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

गुप्तकाल, प्राचीन भारत का स्वर्णिम काल था। गुप्तकाल में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, साहित्यिक, कला एवं स्थापत्य सहित अन्य सभी क्षेत्रों में चरमोत्कर्ष की स्थिति रही। इसका प्रमाण हमें गुप्तकालीन साहित्य, कला, स्थापत्य तथा पुरातात्त्विक उत्खननों से प्राप्त पुरा सामग्री से मिल जाता है।

गुप्तकाल की कला अतिविशिष्ट थी। इसमें कलात्मक सौन्दर्य के साथ–साथ भाव प्रवणता व सौंदर्यता का समावेश था। गुप्तकालीन कलाकारों ने कला में सजीवता ला दी थी।

गुप्तकाल में मध्यप्रदेश में स्थित एरण का महत्व अपनी भौगोलिक स्थिति व कला–वैभव के कारण विशिष्ट था। गुप्तकाल में एरण का एक वैभवशाली नगर था, इसकी ख्याति सर्वत्र थी। गुप्तकाल में इसका सांस्कृतिक एवं सामरिक महत्व चरमोत्कर्ष पर था।

एरण, मध्यप्रदेश के सागर जिले की बीना तहसील में सागर नगर से लगभग 75 कि.मी. उत्तर–पश्चिम दिशा में स्थित है।[1] एरण बेतवा की सहायक नदी बीना (प्राचीन बेण्वा) के तट पर बसा हुआ है। सन् 1875 में एरण के पुरातात्त्विक सर्वेक्षण करने वाले अलेक्जेण्डर कनिंघम के अनुसार एरण से प्राप्त आहत मुद्राओं पर अंकित नदी चिन्हों से इस बात की पुष्टि होती है।[2]

एरण की भौगोलिक स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके एक ओर बुन्देलखण्ड तथा दूसरी ओर मालवा का भू–भाग है। प्राचीन काल से ही यह स्थान पूर्णतः सुरक्षित माना गया। नव पाषाण काल से ही यह स्थल मानव की क्रीड़ास्थली रहा है। बीना नदी उत्तर–पश्चिम एवं पूर्व दिशा से एरण को अपने घेरे में लेकर अर्द्धचन्द्राकार रूप में प्रवाहित होती हुई उसको स्वाभाविक सुरक्षा प्रदान करती है। चौथी ओर ताम्रपाषाण युग में निर्मित सुरक्षा दीवार है। एरण, बुन्देलखण्ड और मालवा के मध्य एक प्रवेश–द्वार के समतुल्य था।[3] प्राचीन काल में एरण प्रमुख राजमार्ग पर स्थित था। यह मार्ग उज्जियनी, विदिशा होता हुआ एरण आता था, यहाँ से भरहुत होते हुए कौशाम्बी तक जाता था।[4] इस कारण भी इसका महत्व अधिक था। विशेष रूप से गुप्तकाल में यह राजनीतिक व सामरिक दृष्टि से विशिष्ट महत्व रखता था।

एरण में किए गये उत्खननों के फलस्वरूप अनेक नवीन तथ्यों पर प्रकाश पड़ा है। प्राचीन काल में एरण एक वैभवशाली नगर था। शक, नाग, गुप्त, हूण व गुर्जर प्रतिहार यहाँ आये। गुप्तकाल में इसका राजनीतिक व सांस्कृतिक महत्व चरमोत्कर्ष पर था। एरण से प्राप्त गुप्तकालीन अभिलेख, मुद्राएँ, स्थापत्य व मूर्तियाँ गुप्तकालीन एरण के महत्व को सिद्ध करते हैं। गुप्तकालीन कला एवं स्थापत्य के क्षेत्र में एरण का योगदान अतिविशिष्ट है।

गुप्तवंश के इतिहास में एरण की अहम भूमिका रही है। समुद्रगुप्त[5], बुधगुप्त[6] और भानुगुप्त के शासन काल के अभिलेखों, रामगुप्त की मुद्राएँ[7] सुरक्षा दीवार तथा मंदिरों व मूर्तियों के निर्माण के द्वारा एरण का महत्व प्रदर्शित हुआ है। इसकी महत्वपूर्ण स्थिति के कारण गुप्त सम्राटों ने सैनिक नियंत्रण की दृष्टि से इस स्थान को सर्वोत्तम समझा।

एरण क्षेत्र के कलावेशष यहाँ की गौरवशाली कला परम्परा को प्रगट करने में सक्षम हैं। एरण में दृष्टव्य गुप्तकालीन मंदिरों के भग्नावशेष, पाषाण प्रतिमाएँ, शिलापट्ट, सर्वेक्षण व उत्खननों में प्राप्त मुद्राओं तथा मृण्मूर्तियाँ से एरण की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति के विविध पक्ष उद्घाटित हुए हैं।

सामाजिक स्थिति

एरण की गुप्तकालीन कला एवं स्थापत्य शिल्प के उपलब्ध अवशेषों से गुप्तकाल में एरण क्षेत्र की सामाजिक स्थिति के विविध पक्षों पर प्रकाश पड़ा है।

गुप्तकालीन एरण क्षेत्र के निवासियों में किस प्रकार के वस्त्राभूषणों का प्रचलन था इसका प्रमाण एरण की गुप्तकालीन देव प्रतिमानाओं व मंदिर स्थापत्य में प्रदर्शित शिलापट्टों व मृण्मूर्तियाँ से मिलता है। एरण की गुप्तकालीन देव प्रतिमाओं पर वस्त्र–परिधान व आभूषणों का अंकन हुआ है। महाविष्णु प्रतिमा, नृसिंह प्रतिमा, नृवराह प्रतिमा, मानवाकार गरुड मूर्ति पर धोती का अंकन है। देवी प्रतिमाओं में महिषमर्दिनी, गजलक्ष्मी, गंगा यमुना व उनकी छत्रधारिणियाँ तथा माता देवकी आदि की आकृतियों पर साड़ी व चोली का अंकन है। गुप्तकालीन पाषाण व मृण्मूर्तियों को कलात्मक आभूषणों से अलंकृत किया गया है। जिससे यह आभासित होता है कि गुप्तकाल में आभूषणों का प्रयोग सौन्दर्य वृद्धि के लिए होता था। महाविष्णु किरीट मुकुट प्रदर्शित है। नृवराह चपटा हार धारण किए हुए हैं जिसमें कई चौकोर बंध लगे हैं, नृसिंह प्रतिमा पर प्रदर्शित पंचलड़ा हार विशेष रूप से उल्लेखनीय है। महाविष्णु, नृवराह, नृसिंह तथा सूर्य प्रतिमाओं पर वनमाला का अंकन हुआ है। गुप्तकालीन देव व मानवीय प्रस्तर प्रतिमाएं हार, भुजबंध, कर्णाभूषण, कटिमेखला व पैरों में पायल व सादे कड़ों का अंकन है। उत्खनन में प्राप्त मानवीय मृण्मूर्तियों पर वस्त्राभूषणों का अंकन हुआ है। नारी की मृण्मूर्तियों पर एकावली हार, सादा हार, चक्राकार कर्णाभूषण, भुजबंध, कटिमेखला, पैरों में पायल का अंकन है।

गुप्तकालीन प्रस्तर, मृण्मूर्तियों तथा मंदिर स्थापत्य पर प्रदर्शित आकृतियों के द्वारा यह संकेत मिलता है कि इस क्षेत्र में नारियाँ साड़ी, चोली व उत्तरीय वस्त्र धारण करती थीं व पुरुष धोती व उत्तरीय धारण करते थे। पुरुष कमरपट्ट, भुजबंध, कड़े, कर्णाभूषण, हार, ग्रेवेयक, व कडा़ धारण करते थे तथा नारियाँ सिरोभूषण, कटिमेखला, भुजबंध, कड़े, चक्राकार व सादे कर्णाभूषण, हार, कंगन, पायल आदि आभूषणों को धारण करती थीं।

एरण की देव प्रतिमाओं, शिलापट्टों व मृण्मूर्तियाँ सुन्दर केश विन्यास से युक्त हैं। मातृदेवी की मृण्मूर्तियाँ केश विन्यास अलंकृत व गुच्छेदार है। कुछ आकृतियों में तिहरे गुच्छक शैली के सामान्य उभारों के माध्यम से सुन्दर केश विन्यास हुआ है। नृसिंह प्रतिमा में अयालों (बालों) का कलात्मक अंकन विशिष्ट है। गरुड़ आकृतियों में उड़ते हुए केशों का अंकन हुआ है अन्य देव प्रतिमाएँ भी आकर्षक केश विन्यास से युक्त हैं। एरण क्षेत्र के गुप्तकालीन नर–नारियों की सुन्दर केश विन्यास के प्रति अभिरूचि का संकेत मिलता है।

गुप्तकालीन एरण के निवासी अपने मनोरंजन के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों का प्रयोग करते थे। मंदिर स्थापत्य पर प्रदर्शित विभिन्न शिलापट्टों व कलात्मक स्तम्भों पर वीणा वादक, मंजीरावादक, नृत्यरत किन्नरों तथा

हाथ में मदिरा पात्र लिए मद्यपों का अंकन हुआ है। गुप्तकालीन अनेक मृण्मूर्तियाँ बालकों के क्रीडार्थ निर्मित की गयी थी। प्राप्त मृण्मूर्तियो से यह दर्शित होता है कि गुप्तकाल में शिशुओं तथा वयस्कों के आमोद–प्रमोद के अनेक साधन उपलब्ध थे। गुप्तकालीन एरण के निवासियों के जीवन में नृत्य, संगीत व अन्य साधन उपलब्ध थे। नृत्य व संगीत विशेष लोकप्रिय माध्यम था। उनके जीवन में मनोरंजन के लिए पर्याप्त स्थान था। यहाँ के निवासी संगीत, शतरंज, आखेट और खिलौनो के द्वारा अपना मनोरंजन करते थे।

गुप्तकालीन एरण की देव प्रतिमाओं के साथ उनके आयुधों का अंकन हुआ है। महाविष्णु तथा शेषशायी विष्णु प्रतिमा में गदा आयुध को प्रदर्शित किया गया है। महाविष्णु मंदिर के स्तम्भों पर उत्कीर्ण द्वारपालों को दण्ड धारण किए हुए, निर्मित किया गया हैं। बलराम की प्रतिमा में हल का अंकन है। महिषमर्दिनी के हाथों में दण्ड एवं चक्र प्रदर्शित हैं। शिलाफलकों की आकृतियों में भी अस्त्र–शस्त्र का अंकन है। देव व अन्य प्रतिमाओं के आयुधों से गुप्तकालीन एरण के अस्त्र एवं शस्त्रों का परिचय मिलता है।

गुप्तकालीन एरण के निवासी सिंह, भैंसा, गज, अश्व, हंस, गरुड़, वराह, मछली आदि पशु–पक्षियों से परिचत थे। इसका प्रभाव यहाँ से प्राप्त पशु–पक्षियों की मृण्मूर्तियों से मिलता है। महाविष्णु व नृसिंह मंदिर के द्वार स्तम्भों पर उत्कीर्ण सिंह आकृतियों, प्रस्तर फलकों पर उत्कीर्ण सिंह मानव युद्ध दृश्यों से एरण क्षेत्र में सिंहों की उपस्थिति प्रमाणित होती है। गुप्तकालीन मृण्मूर्तियों में हाथी की मृण्मूर्तियाँ व महाविष्णु मंदिर के स्थापत्य में शिलाफलकों पर हाथियों का अंकन, गजलक्ष्मी की प्रतिमा तथा गजलक्ष्मी की मृण्मुहर से हाथियों का महत्व दर्शित होता है। गरुड़ध्वज स्तम्भ पर व महाविष्णु मंदिर के सिरदल के मध्य गरुड़ासीन विष्णु आकृति से तथा सिक्कों पर गरुड़ का अंकन गरुड़ की धार्मिक महत्ता का परिचायक है। महाविष्णु मंदिर के गर्भगृह की देहरी में कल्पवृक्ष पर हंसों की उत्कृष्ट आकृतियाँ हंसों के महत्व को दर्शित करती है। पशु वराह की प्रचण्ड प्रतिमा वराह में ईश्वरीय शक्ति प्रदर्शित है। गुप्तकालीन वास्तुशिल्प में व्यालकों का शिल्पांकन काल्पनिक पौराणिक पशुओं का परिचय देते हैं।

संदर्भ

1. सिंह, उदयवीर, ''एरण ए चालकोलिथिक सेटिलमेंट'', बुलेटिन ऑफ ऐंशियेन्ट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड ऑर्क्यालॉजी, सागर विश्वविद्यालय, सागर 1967, वाल्यूम 1, पृ.29
2. कनिंघम, ए., क्वायंस ऑफ द ऐंशियेंट इण्डिया, लंदन, 1936, पृ.96
3. सागर जिला गजेटियर, भोपाल, 1970, पृ.511
4. वाजपेयी, कृष्णदत्त एवं पाण्डेय, श्याम कुमार, भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का योगदान, इलाहाबाद, 1967, पृ.114
5. कार्पस इन्सक्रिप्सन्स इण्डिकेरम, जिल्द–3, पृ.31
6. कनिंघम, अलेक्जेण्डर : 'रिपोर्ट्स ऑफ टूर्स इन मालवा एण्ड बुन्देलखण्ड', वाराणसी, 1966, पृ.8
7. झा, विवेकदत्त, 'बुन्देलखण्ड का इतिहास', ईसुरी, अंक–1, बुन्देली पीठ, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, 1989, पृ.83–84.